Kolhan University, Chaibasa

History UG Sem-V

Paper CC -11

भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के कारण :-

भारतीय राष्ट्ररवाद का उदय भरतीये इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है| भारतीय राष्ट्रवाद को समझने से पहले राष्ट्रवाद को समझना आवश्यक है|साधारण अर्थ में अगर हम कहे तो हम कह सकते है क अपने राष्ट्र के प्रति भक्ति की भावना |पर अगर हम इसकी परिभाषा देना चाहे तो हम कहेंगे कि जब एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों क बिच जब सामाजिक ,राजनितिक ,आर्थिक ,और सांस्कृतिक रूप से एकता देखने को मिलती है तो उसे हम राष्ट्रवाद कहते है

जब हम भारतीय राष्ट्रवाद की बात करते है तो ये भारत के लिए कोई नई चीज नहीं थी |भारत में औपनिवेशिक काल के पहले भी राष्ट्रवाद था लेकिन वह क्षेत्रीय राष्ट्रवाद था |उस समय भारत छोटे छोटे राजनितिक इकाइयों में बंटा हुआ था और वहाँ अपने ही क्षेत्र या प्रान्त के प्रति राष्ट्रवाद की भावना थी |राष्ट्रीय राष्ट्रवाद औपनिवेशिक काल में ही आया |खास कर १९वीं सदी के उत्तरार्ध में इसका विकास देखने को मिलता है |

भारतीय राष्ट्रवाद के कारण :- भारतीय राष्ट्रवाद के करने को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते है --

१:राजनितिक कारण

२:सामाजिक कारण

३:आर्थिक कारण

४:सांस्कृतिक कारण

५:वैदेशिक प्रभाव

१:राजनितिक कारण :- राजनितिक करणों में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण कारण था १८५७ की क्रांति |१८५७ की क्रांति को भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम मन जाता है |इस क्रांति में भारत के हर एक वर्ग के लोगो ने भाग लिया |इस आंदोलन में महिलाओं ने भी भरी संख्या में हिस्सा लिया |इस आंदोलन ने संपूर्ण भारत को एक साथ ला क्र खड़ा कर दिया था |भले ही यह आंदोलन कुछ समय के बाद दबा दिया गया था थतापी इस आंदोलन ने भारतीय सवतंत्रता का मार्ग प्रशश्त क्र दिया |अतः इस आंदोलन का राष्ट्रवाद के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका है |

राष्ट्रवाद के उदय में कांग्रेस की स्थापना की भूमिका रही |उस समय कांग्रेस सिर्फ एक संस्था नहीं थी बल्कि यह सभी भारतवासियों की आवाज़ थी |समय समय पर कांग्रेस के अधिवेशनो को भारत के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित किया गया तथा इसके अध्यक्ष विभिन्न वर्ग से चुने गए ताकि एकता की भावना को बल मिल सके |

Sensitivity: Internal & Restricted

इसके अलावा लार्ड डलहौजी और लार्ड वेलेस्ली की नीतियोँ ने भारतीय राजाओं और भारतीय जनता में असंतोष की भावना को बढ़ाया |डलहौजी की राज्य हड़प की निति और वेलेजली की सहायक संधि की नीतियों के कारण भारतीय राजाओं का राज्य ब्रिटिश राज्य में मिला लिया गया उनकी उपाधियाँ छीन ली गई उनके पेंशन बंद करवा दी गई |इससे भारतीय राजाओं में गहरा असंतोष था |

ये कुछ ऐसी घटनायें थी जिन्होंने संयुक्त रूप से राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया |

२:आर्थिक कारण :- अर्थ व्यवस्थ के दो पहलु होते है व्यवसाय और कृषि |अंग्रेजोंकीआर्थिक नीतियों ने दोनों की हालत बुरी कर दी थी |भारत का सारा कच्चा माल ब्रिटेन चला जाता था और वहां का तैयार माल भारतियों बाज़ारों में भरा पड़ा था |इसी कारण भारतीय व्यवसाय की हालत ख़राब थी |कृषि की भी वही दशा थी |कृषि की दशा में सुधार लाने और वैज्ञानिक तरीके से कृषि करने के बारे में कभी सोचा हीं नहीं गया बस हर साल लगन में बढ़ोतरी होती चली गई |अकाल और दुर्भिक्ष के समय भी कृषको को सरकार के तरफ से कोई सहायता नहीं मिली |ऐसे में दादाभाई नौरोजी का" धन का निस्यंदन" का सिद्धांत आया जिसने लोगो को जागरूक किया और भारतीय जनता में राष्ट्रवाद की भावना प्रबल होती चली गई

३:सामाजिक कारण :- सामाजिक कारणों में सामाजिक धार्मिक आंदोलनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा जो उस समय हो रहे थे|उस समय भारत चरों तरफ अन्धविश्वास और कुरीतियां व्याप्त थी ऐसे में राजा राममोहन राय,स्वामी विवेकानंद ,स्वामी दयानंद सरस्वती ,एनी बेसेंट, तिलक जैसे लोगों ने लोगों के जीवन से अंधकार को दूर करने तथा उन्हें प्रकाश की तरफ लाने का प्रयास किया |स्वामी दयानंद ने "वेदों की ओर लौटो ""एक अच्छे विदेशी शाशन से एक ख़राब स्वदेशी शाशन अच्छा होता है "तथा "भारत भारतियों के लिए " जैसे नारे दिए |एनी बेसेंट की थियोसोफिकल सोसाइटी ने भी लोगो को जागरूक किया |स्वामी विविकानंदा ने भारतीय संस्कृति को पश्चिमी संस्कृति से बेहतर बता कर लोगों में जाग्रति पैदा की |इस प्रकार सुधारको के सुधार आंदोलन ने भी लोगो को एकजुट करने में महत्ववूर्ण भुमका अदा की

४:सांस्कृतिक कारण :- इसमें हम मुख्या रूप से रेल का आविष्कार ,अंग्रेजी शिक्षा की व्यवस्था ,समाचार पत्र,और कुछ सांस्कृतिक आंदोलनों को ले सकते है |

अंग्रेजों ने रेल का आविष्कार अपने फायदे के लिए किया था ताकि ोारिवाहन की सुविधा हो और व्यापार का विकास हो सके |रेल ने निसंदेह परिवहन को सरल ओर सुगम बनाया ओर इससे व्यापार का विकास तेजी से हुआ पर इससे लोगों के बीच की दुरी मिटी ,लोग एक दूसरे के ज्यादा करीब आए इससे विचारों के अदन-प्रदान में सहूलियत हुई |

उसी प्रकार अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार अंग्रेजों ने इस उद्देश्य से किया था के उन्हें एक शिक्षित वर्ग मिल सके जो उनके कार्यों को सरलता से कर सके |सीधे शब्दों में कहे तो उन्हें एक शिक्षित क्लर्क वर्ग चाहिए था परन्तु इसका भी फायदा भारतियों को मिला| अब भारतीय अंग्रेजों की नीतियों को बेहतर ढंग से समझने लगे |अंग्रेजी शिक्षा और स्कूलों के निर्माण के कारण हर वर्ग के भारतीय बच्चे अब एक साथ बैठ कर शिक्षा ग्रहण करने लगे जिससे उनमे समानता की भावना का विकास हुआ और अब उनकी सोच एक धरा में प्रवाहित होने लगी |

Sensitivity: Internal & Restricted

इसी प्रकार समाचार पत्रों के विकास ने व् राष्ट्रवाद के विकास में अहम् भूमिका निभाई |गाँधी जी ,तिलक ,राजाराम मोहन राय ,ने समय समय पर क्षेत्रीय भाषाओँ में समाचार पत्र निकले जिसके कारण आम जनता तक अंग्रेजों की नीतियां आसानी तक पहुंचने लगे साथ ही इस माध्यम ने लोगों को एक दूसरे के करीब लाने में भूमिका निभाई |इसके अलावा तिलक ने "शिवजी महोत्सव" और" गणेश महोत्सव" जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू किये उसने भी लोगों में एकजुटता और राष्ट्रीयता की भावना प्रबल करने में सहायता पहुंचाई|

५ वैदेशिक प्रभाव :- उस समय संपूर्ण विश्व में जो घटने घट रही थी उन घटनाओं ने भी भारत में राष्ट्रीयता को फ़ैलाने में सहायता पहुंचाई|

१७७६ का अमेरिकी गृह युद्ध जिसमे अमेरिका के हाथों ब्रिटेन की हार हुई |इससे भारतियों के मन से ब्रिटेन का भय कम हुआ |१७८९ की फ्रांसीसी क्रांति ने भी भारतियों में राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ाया ,जिसने न सिर्फ भारत को बल्कि संपूर्ण विश्व को" समानता ,स्वतंत्रता ,और बन्धुत्वा" , की शिक्षा दी|१८९४-९५ के चीन -जापान युद्ध का परिणाम जिसमे जापान जैसे छोटे देश का चीन जैसे विशाल राष्ट्र को हरा देना साथ ही १९०४-०५ का रूस -जापान युद्ध जिसमे जापान द्वारा रूस जैसे बड़े राष्ट्र को हराना भारत को यह सीखा गया कि इस दुनिया में कोई भी अजेय नहीं है |अगर हम एक हो जाय तो बड़ी से बड़ी शक्ति भी हमारे सामने घुटने टेक सकती है |

मुल्यांकन:- इस प्रकार भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में उपर्युक्त कारणो ने सम्मिलित रूप से भूमिका अदा की |भारतीय राष्ट्रवाद ने सभी भारतियों को ये समझाया कि उनकी समस्याएं एक है ,उनका शत्रु एक है अतः जाति ,वर्ग का भेदभाव भुला कर अब उन्हें एक होना होगा |और इस प्रकार भारतीय राष्ट्रवाद की भावना ने लम्बे प्रयास के बाद अंततः १५ अगस्त १९४७ को अंग्रेजों की गुलामी से भारत को आजाद कराया और भारत एक स्वतंत्र ,संप्रभु राष्ट्र के रूप में विश्व के समक्ष अपनी पहचान बना सका |

Shaheena Parween
Lecturer, JLN College,
Chakradharpur
Dept. of History

Sensitivity: Internal & Restricted